- चीन के आधुनिक इतिहास का पता लगाने में;
- यह समझने में कि साम्राज्यवादी शक्तियों ने किस प्रकार से चीन का शोषण किया;
- 19वीं सदी में चीन में किसानों द्वारा लगातार किये गये विद्रोहों पर चर्चा करने में
- चीन की जनता को जागृत करने में सुधार आन्दोलनों द्वारा किये गये योगदान का मूल्यांकन करने में;
- चीनी क्रांति में सुन-यात-सैन के योगदान का मूल्यांकन करने में;
- चीने क्रांति के कारणों का विश्लेषण करने में;
- क्रांतिकारी गृह-युद्ध से पूर्व की गई कार्यवाहियों को समझने में;
- जापान के विरूद्ध अवरोधक युद्ध में चियांग-काई-शेक की भूमिका पर टिप्पणी करने में;
- क्रांति के सैद्धान्तिक संदर्भ की जानकारी प्राप्त करने में;
- क्रांति के काल में माओ-ज़ीडांग की विचारधारा को समझने में।

5.1 प्रस्तावना

हिमालय पर्वत के उत्तर में स्थित विस्तृत क्षेत्र चीन कहलाता है। विश्व की सबसे पुरानी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले इस देश का करीब 3600 वर्षों का इतिहास संकलित है। ऐतिहासिक विकास के लम्बे काल में चीन की जनता ने एक महान संस्कृति का निर्माण किया था एवं मानव जाति के ज्ञान और संस्कृति के समस्त क्षेत्रों में बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। इसके प्रगतिकाल में यहाँ की भूमि पर अनेकों राज्यवंशों का शासन रहा था जिनमें माँन्चू राज्यवंश अंतिम था। उन्नीसवीं सदी के मध्य काल से करीब 100 वर्षों के काल में इस देश को अनेकों विदेशी आक्रमणों, बार-बार होने वाली आन्तरिक आर्थिक समस्याओं, प्राय: होने वाले विद्रोहों, लगातार होने वाले सुधार आन्दोलनों एवं दीर्घकालिक क्रान्तिकारी गृहयुद्धों का सामना करना पड़ा था, जिसके फलस्वरूप चीन में जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुई थी।

इस इकाई में हम सर्वप्रथम विदेशी आक्रमणों एवं इस विषय पर चर्चा करेंगे कि उन्होने चीन को किस प्रकार तबाह किया था एवं किस प्रकार वहाँ की जनता को क्रोध उन्मुक्त किया था। उसके बाद हम उन आन्दोलनों का अध्ययन करेंगे जिनके फलस्वरूप मंचू राज्यवंश का पतन हुआ था। उसके बाद हम राष्ट्रवादी लोकतांत्रिक दलों की शक्ति का मूल्यांकन करेंगे। उसके बाद हम कम्युनिस्टों के उत्थान पर ध्यान केन्द्रित करके क्रांन्तिकारी गृहयुद्धों से पूर्व की गई कार्यवाहियों का पता लगायेंगे। शेष में हम उन सिद्धान्तों का विश्लेषण करेंगे जिनके कारण यहाँ की जनता को क्रांन्तिकारी गृहयुद्धों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था ।

5.2 चीनी क्रान्ति की पृष्ठभूमि

लियाओडोन्ग प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में से जूरचिड मूल के एक छोटे से राष्ट्र मंचू ने पीकिन्ग पर अपना अधिकार करके सन् 1644 में चीन के सिंहासन पर मंचू राज्यवंश की स्थापना की थी।

मंचू शासन काल करीब 268 वर्ष तक चला। इस काल में विज्ञान एवं संस्कृति के क्षेत्रों में बहुत महान उपलब्धियाँ हुई थी। मंचुओं की अधीनता में चीन में काफी लम्बे काल तक शान्ति रही एवं आर्थिक रूप में काफी सम्पन्नता प्राप्त हुई। फिर भी उन्नीसवीं सदी के आरंम्भिक काल में विदेशी शक्तियों के आगमन के बाद से समस्याएं उत्पन्न होनी शुरू हो गयी थी। बार-बार के विदेशी आक्रमणों के साथ ही कृषि सम्बन्धी आर्थिक व्यवस्था में गतिहीनता आ जाने के कारण दीर्घकालीन आर्थिक रूपी समस्याएं उत्पन्न हो गई थी। क्रमानुगत रूप से अंकुश शासकों द्वारा राज्य अधिकार प्राप्त करने, राजमहलों के षड्यंत्रों, एवं सुधार आन्दोलनों के प्रति एक धनी विधवा सिक्सी के नेतृत्व में रूढ़िवादी दलों द्वारा की गई प्रतिकूल गतिविधियों के कारण परिस्थितियां और अधिक खराब हो गई थी।